रक्षाबंधन

बंधन को रक्षा और बंधन के शब्दों से मिलकर बनाया गया है। इसका मतलब होता है बहन की सुरक्षा के लिए भाई की प्रतिबद्धता। यह त्यौहार भाई-बहन के पवित्र और आत्मीय रिश्ते को स्वीकार करने का प्रतीक है। रक्षा बंधन उन सभी भाई-बहन के लिए एक अद्वितीय मौका होता है, जब वे एक-दूसरे के प्रति अपनी स्नेह को व्यक्त कर सकते हैं। रक्षा बंधन, या राखी, भाई-बहनों के बीच अटूट प्यार को दर्शाने के लिए मनाया जाता है। यह त्यौहार प्रतिवर्ष श्रावण मास (सावन माह) की पूर्णिमा तिथि (पूर्णिमा दिवस) पर पड़ता है। इस दिन बहनें पूजा-अर्चना करके भाइयों की कलाइयों पर राखी बांधती हैं और उनके स्वास्थ्य व जीवन में सफल होने की कामना करती हैं। वहीं भाई अपनी बहनों की रक्षा करने, उन्हें प्यार करने और विपरीत स्थिति में उनकी मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहने का वचन देते हैं ।रक्षा बंधन हिंदुओं के लिए एक महत्वपूर्ण त्यौहार है। इस त्यौहार से जुड़ी किंवदंतियों में से एक महाकाव्य महाभारत से उत्पन्न होती है। पौराणिक कथाओं के मुताबिक भगवान कृष्ण की उंगली सुदर्शन चक्र से गलती से कट गई थी। यह देखकर द्रौपदी ने खून रोकने के लिए अपनी साड़ी से कपड़े का एक टुकड़ा फाड़कर चोट पर बांध दिया। भगवान कृष्ण उनके हाव-भाव से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने हमेशा उनकी रक्षा करने का वादा किया। उन्होंने अपना यह वादा तब पूरा किया जब द्रौपदी को हस्तिनापुर के शाही दरबार में सार्वजनिक अपमान का सामना करना पड़ा। रक्षा बंधन का त्यौहार भाई-बहन के प्यार व भाइयों द्वारा बहनों की रक्षा के प्रतीक के रूप में भी मनाया जाता है। इस दिन बहनें, भाइयों को राखी बांधती हैं और उन्हें मिठाइयां आदि खिलाती हैं। वहीं, भाई इस दिन बहनों की रक्षा का वचन देते हैं। रक्षाबंधन का त्यौहार भारतीय समाज में परिवार के बंधनों को मजबूत करता हैं और बच्चों व सभी को पवित्र रिश्तों की महत्वपूर्णता सिखाता हैं । यह रिश्ते न केवल परिवार में , बल्कि समाज में भी सद्भावना व सामंजस्यिकता की भावना को मजबूती देते हैं ।इस प्रकार , रक्षा बंधन एक पवित्र त्यौहार हैं जो भाई - बहन के पवित्र और सजीव रिश्ते का प्रतीक है । यह न केवल पारिवारिक बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण हैं और यह रिश्तों की अनुकूलता को सिद्ध करता हैं

प्रदीप छाजेड़ (बोरावड़)

सांसियों का तला में ग्रामोदय राम रसोड़े का हुआ शुभारंभ

बाड़मेर राजस्थान बाबा श्री रामदेवजी के रामदेवरा पैदल यात्रियों के विश्राम, अल्पाहार आदि सेवा को लेकर बुधवार को सांसियों का तला में जन कल्याण संस्थान बाड़मेर एवं ग्रामीणों की ओर से अभियान ग्रामोदय के तहत् ग्रामोदय राम रसोड़े का शुभारम्भ सामाजिक कार्यकर्ता मुकेश बोहरा अमन, भामाशाह देवीचन्द वडेरा व किशनलाल सिसोदिया सहित ग्रामीणों की उपस्थित में हुआ। जहां पंडाल का फीता खोलकर ग्रामोदय राम रसोड़े का उद्घाटन हुआ। मदन सिसोदिया ने बताया कि सांसियों का तला राजस्व गांव में बुधवार को जन कल्याण संस्थान व ग्रामीणों के सहयोग से अभियान ग्रामोदय के तहत ग्रामोदय राम रसोड़े का शुभारम्भ हुआ। जहां पंडाल का फीता खोलकर उद्घाटन पश्चात बाबा श्री रामदेवजी की प्रतिमा के समक्ष दीप-प्रज्ज्वलन व बाबा की आरती की गई। कार्यक्रम में संस्थान व गांव की ओर से भामाशाहों का सम्मान किया गया। इस दौरान एक बहुत बड़ी पहल के तहत सामाजिक कार्यकर्ता मुकेश अमन के आह्वान पर 130 ग्रामीणों ने मांसाहार त्याग व नशामुक्ति का संकल्प लिया। और सांसियों का तला गांव को एक आदर्श गांव बनाने की भी शपथ ली।संस्थान अध्यक्ष व सामाजिक कार्यकर्ता मुकेश बोहरा अमन ने कहा कि जन-जन की आस्था के केन्द्र बाबा श्री रामदेवजी महाराज के प्रति हर व्यक्ति में अटूट श्रद्धा है। उनके दर्शन को प्रति वर्ष लाखों भक्तगण पैदल यात्रा करते है। उन पैदल यात्रियों की सेवा को लेकर यह ग्रामोदय राम रसोड़ा शुरू किया गया है। अमन ने कहा कि भेदभाव रहित व नशामुक्त समाज से ही हर व्यक्ति का कल्याण हो सकेगा। यह जीवन सुखद व आनन्दमय बन सकेगा।ग्रामोदय राम रसोड़े के शुभारंभ के दौरान देवीलाल वडेरा, मुकेश अमन, एडवोकेट नवलकिशोर लीलावत, किशनलाल सिसोदिया, गौतम बोथरा, रूपेश मालू, सौरभ बोहरा, राजेश जोशी, डालूराम सेजू, मदन सिसोदिया, गेमराराम, नारायण, प्रेम रामधारी, मांगीलाल सिसोदिया, मदन, गणपत, हाथी सिसोदिया सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण व बच्चे उपस्थित रहे।

रक्षाबंधन : भाई बहन के हेत प्रेम का त्योहार

रक्षाबंधन सिर्फ एक धागा नहीं, एक वादा है भाई-बहन के प्रेम, प्यार और अटूट विश्वास का त्यौहार है रक्षाबंधन।एक तरफ बहन की कलाई पर सजी राखी में छुपी होती है दुआएं - कि मेरा भाई हमेशा सलामत रहे, खुश रहे। दूसरी तरफ भाई की आँखों में छुपा होता है एक अनकहा वचनकि चाहे कुछ भी हो जाए, मैं हमेशा तेरे साथ खड़ा रहूँगा।यही तो खूबसूरती है इस रिश्ते की - लड़ाई भी, तकरार भी, मस्ती भी, नोकझोंक भी, और फिर एक-दूसरे के लिए जान भी।बचपन में वही भाई जो तुम्हारी चॉकलेट चुरा लेता था, आज वही तुम्हारी हर मुश्किल में ढाल बन जाता है। और वही बहन जो हर छोटी बात पर शिकायत करती थी, आज वही तुम्हारी सबसे बड़ी ताकत बन जाती है। सभी बहन भाइयों को रक्षाबंधन पर्व की बधाई आपका हर दिन शुभ मंगलमय हो ऐसी कामनाएं। **जय जगद्गुरु भगवान महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषि। (गुरू) सूबेदार रावत गर्ग उण्डू (राज) श्री हरि विष्णु कृपा भवन, श्री गर्गवास राजबेरा, राजस्थान**

वेद धर्मशास्त्र

कुशा का हिंदू धर्म में आध्यात्मिक एवं पौराणिक महत्त्व

अध्यात्म और कर्मकांड शास्त्र में प्रमुख रूप से काम आने वाली वनस्पतियों में कुशा का प्रमुख स्थान है। इसका वैज्ञानिक नाम श्वह्लद्दह्लश्वह्यह्लह्वद्बह्य ष्4ठ्ठश्- ह्यह्वह्ल्श्वद्बस्रद्गह्य है। इसको कांस अथवा ढाब भी कहते हैं। जिस प्रकार अमृतपान के कारण केतु को अमरत्व का वर मिला है, उसी प्रकार कुशा भी अमृत तत्त्व से युक्त है।

अत्यन्त पवित्र होने के कारण इसका एक नाम पवित्री भी है। इसके सिरे नुकीले होते हैं। इसको उखाड़ते समय सावधानी रखनी पड़ती है कि यह जड़ सहित उखड़े और हाथ भी न कटे। कुशल शब्द इसीलिए बना। ' ऊँ हुम् फट ' मन्त्र का उच्चारण करते हुए उत्तराभिमुख होकर कुशा उखाडी जाती है ।

यह पौधा पृथ्वी लोक का पौधा न होकर अंतरिक्ष से उत्पन्न माना गया है। मान्यता है कि जब सीता जी पृथ्वी में समाई थीं तो राम जी ने जल्दी से दौड़ कर उन्हें रोकने का प्रयास किया, किन्तु उनके हाथ में केवल सीता जी के केश ही आ पाए। ये केश राशि ही कुशा के रूप में परिणत हो गई। सीतोनस्यूं पौड़ी गढ़वाल में जहाँ पर माना जाता है कि माता सीता धरती में समाई थी, उसके आसपास की घास अभी भी नहीं काटी जाती है।

भारत में हिन्दू लोग इसे पूजा /श्राद्ध में काम में लाते हैं। श्राद्ध तर्पण विना कुशा के सम्भव नहीं हैं कुशा से बनी अंगूठी पहनकर पूजा /तर्पण के समय पहनी जाती है जिस भाग्यवान् की सोने की अंगूठी पहनी हो उसको जरूरत नहीं है। कुशा प्रत्येक दिन नई उखाडनी पडती है लेकिन अमावस्या की तोडी कुशा पूरे महीने काम दे सकती है और भादों की अमावस्या के दिन की तोडी कुशा पूरे साल काम आती है। इसलिए लोग इसे तोड के रख लते हैं।

केतु शांति विधानों में कुशा की मुद्रिका और कुशा की आहूतियां विशेष रूप से दी जाती हैं। रात्रि में जल में भिगो कर रखी कुशा के जल का प्रयोग कलश स्थापना में सभी पूजा में देवताओं के अभिषेक, प्राण प्रतिष्ठा, प्रायश्चित कर्म, दशविध स्नान आदि में किया जाता है।

केतु को अध्यात्म और मोक्ष का कारक माना गया है। देव पूजा में प्रयुक्त कुशा का पुनः उपयोग किया जा सकता है, परन्तु पितृ एवं प्रेत कर्म में प्रयुक्त कुशा अपवित्र हो जाती है। देव पूजन, यज्ञ, हवन, यज्ञोपवीत, ग्रहशांति पूजन कार्यो में रुद्र कलश एवं वरुण कलश में जल भर कर सर्वप्रथम कुशा डालते हैं। कलश में कुशा डालने का वैज्ञानिक पक्ष यह है कि कलश में भरा हुआ जल लंबे समय तक जीवाणु से मुक्त रहता है। पूजा समय में यजमान अनामिका अंगुली में कुशा की नागमुद्रिका बना कर पहनते हैं।

कुशा आसन का महत्त्व

कहा जाता है कि कुश के बने आसन पर बैठकर मंत्र जप करने से सभी मंत्र सिद्ध होते हैं। नास्य केशान् प्रवपन्ति, नोरसि ताडमानते। -देवी भागवत 19/32 अर्थात कुश धारण करने से सिर के बाल नहीं झडते और छाती में आघात यानी दिल का दौरा नहीं होता। उल्लेखनीय है कि वेद ने कुश को तत्काल फल देने वाली औषधि, आयु की वृद्धि करने वाला और दूषित वातावरण को पवित्र करके संक्रमण फैलने से रोकने वाला बताया है।

इसपर बैठकरसाधना करने से आरोग्य, लक्ष्मी प्राप्ति, यश और तेज की वृद्धि होती है। साधक की एकाग्रता भंग नहीं होती। कुशा की पवित्री उन लोगों को जरूर धारण करनी चाहिए, जिनकी राशि पर ग्रहण पड़ रहा है। कुशा मूल की माला से जाप करने से अंगुलियों के एक्यूप्रेशर बिंदु दबते रहते हैं, जिससे शरीर में रक्त संचार ठीक रहता है।

कुशा की पवित्री का महत्व

कुश की अंगूठी बनाकर अनामिका उंगली में पहनने का विधान है, ताकि हाथ द्वारा संचित आध्यात्मिक शक्ति पुंज दूसरी उंगलियों में न जाए, क्योंकि अनामिका के मूल में सूर्य का स्थान होने के कारण यह सूर्य की उंगली है। सूर्य से हमें जीवनी शक्ति, तेज और यश प्राप्त होता है। दूसरा कारण इस ऊर्जा को पृथ्वी में जाने से रोकना भी है। कर्मकांड के दौरान यदि भूलवश हाथ भूमि पर लग जाए, तो बीच में कुश का ही स्पर्श होगा। इसलिए कुश को हाथ में भी धारण किया जाता है। इसके पीछे मान्यता यह भी है कि हाथ की ऊर्जा की रक्षा न की जाए, तो इसका दुष्परिणाम हमारे मस्तिष्क और हृदय पर पड़ता हैं।

जय जगद्गुरु भगवान महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषि।

सायर गर्ग राजमथाई
लाड़ली ललिता गर्ग,
भावना, खींवराज गर्ग
श्री बागेश्वर धाम सुंदरकांड महिला जैसलमेर, राजस्थान।

राजवीर की सिमरन

लगाव एक ऐसा रिश्ता है, जो खून से नहीं दिल से जुड़ा होता है ।राजवीर भूषण का घर अखनूर के परगवाल इलाके के बिल्कुल आखिरी बॉर्डर पे बसे एक गांव में था, जहाँ खेत खत्म होते ही तारबंदी शुरू हो जाती है। वहाँ सुबह भजन से नहीं, बीएसएफ की गाड़ी की आवाज से होती है। कच्चे रास्ते, चूल्हे का धुआं, और रात को गहरा सन्नाटा। राजवीर के पिता श्री सतपाल जी एक मेहनती किसान हैं। राजवीर इसी मिट्टी में पला-बढ़ा, पर पढ़ने में बहुत तेज था।

वो वर्तमान में जम्मू यूनिवर्सिटी से क्व्द्ब.ष्ठ कर रहा था। रोज सुबह गांव से जम्मू पढ़ने जाता और शाम को फिर पिता का हाथ बंटाने गांव लौट आता।सिमरन जम्मू शहर के परेड की रहने वाली थी, जो जम्मू यूनिवर्सिटी से रूक्क्द्बद्धद्य कर रही थी। शहर में पली-बढ़ी, जहाँ हर सुविधा पास में है।दोनों की मुलाकात यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में हुई। राजवीर अपनी क्व्द्ब.ष्ठ के रिसर्च पेपर ढूंढ रहा था, सिमरन अपनी एम.फिल.की थीसिस। किताब पर हाथ टकराया, बात शुरू हुई।

कुछ लोग जिंदगी में आकर इतने अपने बन जाते हैं कि उनके बिना सब कुछ अधूरा लगता है। राजवीर और सिमरन वैसे ही हो गए। राजवीर जब अपनी दादी तारो देवी की कहानियां और बॉर्डर के किस्से सुनाता, तो सिमरन घंटों सुनती रहती। सिमरन जब अपनी एम.फिल. की नई सोच बताती, तो क्व्द्ब.ष्ठ कर रहा राजवीर उसकी समझदारी पर हैरान रह जाता। दोनों की रूह एक हो गई थी। बिना कहे एक-दूसरे का दर्द समझ जाते थे।जब प्यार की बात घर तक पहुंची, तो किसी ने पैसा-जात नहीं देखी, सबने एक ही बात कही।सिमरन की माँ ने कहा, बेटी, राजवीर लड़का बहुत अच्छा है, क्व्द्ब.ष्ठ कर रहा है, उसके पिता सतपाल जी भी बहुत इज्जतदार हैं। पर तूने सोचा है, तू परगवाल के उस बॉर्डर वाले गांव में कैसे रहेगी? वहाँ बॉर्डर है, कई बार रात को फायरिंग होती है तो सबको बंकर में जाना पड़ता है। वहाँ न तो 24 घंटे लाइट है, न गैस है, चूल्हे पर खाना बनता है।

सुबह चार बजे उठकर चारा लाना पड़ता है। तू शहर में पली है, एम.फिल.करके तू वहाँ कैसे एडजस्ट करेगी?उधर राजवीर की दादी तारो देवी ने राजवीर को बुलाकर कहा, बेटा भूषण, सिमरन हीरा है, पढ़ी-लिखी है, पर शहर की कली है। हमारे यहाँ कीचड़ में चलना पड़ता है, सर्दियों में पानी बर्फ जैसा होता है। अगर तू उसे यहाँ लाया और वो दुखी हुई, तो उसका ये दुख तुझे जिंदगी भर सताएगा। प्यार का मतलब उसे तकलीफ देना नहीं होता।बस, यही फर्क दीवार बन गया एक गांव और शहर की जिंदगी का।बातें कम हो गई, मुलाकातें बंद हो गई, पर लगाव वैसा ही रहा। दूरी मजबूरी बन सकती है, पर सच्चा लगाव कभी मजबूर नहीं होता।राजवीर भूषण ने फिर एक अलग रास्ता चुना। उसने सिमरन को गांव लाने की जिद नहीं की, बल्कि गांव को ही बेहतर बनाने की ठान ली। अपनी क्व्द्ब.ष्ठ की पढ़ाई के साथ-साथ उसने गांव के युवाओं को जोड़ा। पंचायत से मिलकर गांव में दो सोलर लाइटें लगवाई, एक छोटी लाइब्रेरी बनाई और बच्चियों के लिए शाम की क्लास शुरू की। उसके पिता सतपाल जी को भी गर्व हुआ।सिमरन भी शहर में नहीं बैठी रही। वह एम.फिल.के बाद हर हफ्ते उस गांव में जाने लगी। वहाँ की बच्चियों को पढ़ाने लगी। उसे समझ आया कि गांव की औरतें शहर से ज्यादा हिम्मत वाली हैं।आज राजवीर भूषण और सिमरन पति-पत्नी नहीं हैं। उस सोच ने कि शहर की लड़की बॉर्डर के गांव में नहीं रह सकती ने उन्हें मिलने नहीं दिया। पर आज भी जब परगवाल में कोई प्रोग्राम होता है, तो सिमरन जरूर आती है और राजवीर के पिता सतपाल जी उसे बेटी की तरह मानते हैं।

राज कुमार 'राज़'

राखी के अगोरा

राखी के अगोरा म भाई हर एक साल नहीं कई साल ले तरसत रहय। कब आतीस त अपन कलई म रेशम के धागा ल बढ़ मया ले बंधवा लेतेव कहिके अपन माँ करा रमेश हर कलप कलप के बताय लागीस। माँ हर सुनत कम गुनत जादा रहय। रमेश बार बार अपन माँ के चेहरा ल देखय अउ बहिनी मानबत्ती के याद करत भरभरा जावय । माँ हर एक एक बात एकदम समझ जाय। रमेश ल बार बार समझावय - बढ़ परेशान होके मत कलपे कर गा ।देख बाबू तोर एक झन बहिनी हे जब से बिहाव होके जाय हे तब ले ये परेशानी हर तोर करा आय हे।मोर हिसाब से तेहा ये मान ले की तोर कोनो बहिनी नहीं हे । जइसन कि जेकर बहिनी नी रहय तेमन घलो तो जिथे का गा। हव मोर माँ फेर ले जियत कइसे मान लेवव कि मोर छोटे बहिनी नहीं हे। सोंचत - सोंचत बेरा पहा जाथे फेर ले मोर सुरता कम नी होय दाई मे का करो ओ।ओ तनी बहनी मानबत्ती ल जेन आदमी मिले रहय ओहर बढ़ मतवार । खाय पीये के ठिकाना नहीं। खेत खार ल बेच के पियय खवई ले घर,परिवार,दाई ददा,भाई बहिनी,चीज दौलत सब राख हो जाथे। यही हाल मानबती के घर वाला के रहिस। न कोनो ल घर आवन दे न कोनो घर जावन दे। कोई नहीं हे मोर सब बेकार हे समझ के मानबत्ती ल अपन भाई करा न राखी बर भेजय न तीजा पोरा बर।तड़प तड़प के हाथ जोड़य पांव परय तब ले आदमी हर कान मटक नी देवय ।ये साल के राखी तिहार हर शुकरार दिन परे हे। मानबती ये साल जिद्द करके जाहु कहिके सोंचे हे। रमेश ल ये खबर पता चलगेहे ।ओकर मन हर मारे खुशी फुच्छली मारे लागाथे । सब झन संझा बेरा ।खाय के बेरा,बड़े फजर ले गोठ गोठ म अपन बहिनी के आय के खुशी ल बतात नी थकय ।राखी दिन बड़े फजर ले मानबती हे नहा खोकर के बने नवा लुगरा ल पहिन के अपन मईके चल दिस। रमेश मारे खुशी अपन दाई करा जाके तैयार होके पीढ़ा म बइठ गे।झोरा एक दर्जन केरा, सेव फर, अउ सोन पापड़ी मिठई ल धर के लाने रहय।रमेश के हाथ म तीन साल के अगोरा म आज राखी बंधात ओकर आँखी ले आंसू बोहागे । दोनो झन एक दूसर ले पोटार के नान नान लइका मन कस बम फ़ाड़ के रोय ल देखके दाई हर घलो रो डारिस। रमेश अउ मानबती बचपन के मया के गोठ गोठियात अपन अपन बचपना के ख्याल में समा गिन ।

नरेन्द्र नन्द जान्हवी सदन धमतरी,छत्तीसगढ़

रक्षाबंधन : कलाई पर बँधता धागा, दिलों में जुड़ता रिश्ता

रक्षाबंधन केवल कलाई पर बाँधी जाने वाली राखी का त्योहार नहीं है। यह उन रिश्तों को फिर से महसूस करने का अवसर है, जिनकी गर्माहट अक्सर जीवन की आपाधापी में कहीं पीछे छूट जाती है। राखी का एक छोटा-सा धागा अपने भीतर बचपन की शरारतें, रूठना-मनाना, साझा सपने, अनगिनत यादें और जीवनभर साथ निभाने का विश्वास समेटे रहता है।

जब बहन भाई की कलाई पर राखी बाँधती है और माथे पर तिलक लगाती है, तो उस क्षण में शब्द बहुत छोटे पड़ जाते हैं। दीपक की लौ, रोली की खुशबू और मिठाई की मिठास के बीच एक ऐसा भाव जन्म लेता है, जिसे किसी बाजार से खरीदा नहीं जा सकता। भाई के लिए राखी बहन के प्रेम और विश्वास का प्रतीक है, तो बहन के लिए भाई का स्नेह और संबल उसके जीवन की अनमोल पूँजी।

राखी की असली कीमत

आज बाजार में राखियों के असंख्य रंग और डिजाइन उपलब्ध हैं। कहीं चाँदी की राखी है, कहीं रेशम की, कहीं बच्चों के पसंदीदा कार्टून पात्रों वाली राखी। लेकिन राखी की असली कीमत उसकी चमक में नहीं, बल्कि उस भावना में है जिसके साथ उसे बाँधा जाता है।

कभी एक साधारण-सा मौली का धागा भी करोड़ों की संपत्ति से अधिक मूल्यवान हो जाता है, क्योंकि उसमें बहन की प्रार्थना और भाई के प्रति अटूट विश्वास बँधा होता है।

यही कारण है कि वर्षों बाद भी बचपन की वह राखी संभालकर रखी हुई मिल जाए तो आँखों में अनायास नमी और चेहरे पर मुस्कान दोनों साथ आ जाते हैं।

समय बदला, रिश्ता नहीं

समय के साथ परिवारों का स्वरूप बदल रहा है। संयुक्त परिवार छोटे हो रहे हैं। भाई-बहन पढ़ाई, नौकरी और व्यवसाय के कारण अलग-अलग शहरों और देशों में रहने लगे हैं। कई बार राखी के दिन भी मिलना संभव नहीं होता।

लेकिन दूरी ने रिश्ते की भावना को समाप्त नहीं किया है। वीडियो कॉल पर बहन भाई की कलाई देख लेती है, ऑनलाइन राखी पहुँच जाती है, डिजिटल शुभकामनाएँ भेज दी जाती हैं; फिर भी मन के किसी कोने में वही इच्छा रहती है—काश! आज बचपन की तरह साथ बैठकर राखी बाँध पाती।

तकनीक दूरी कम कर सकती है, पर रिश्तों की आत्मीयता का स्थान नहीं ले सकती। रक्षाबंधन हमें यही याद दिलाता है कि संबंधों को जीवित रखने के लिए केवल संपर्क नहीं, संवेदना भी जरूरी है।

भाई की कलाई से आगे की जिम्मेदारी

रक्षाबंधन को केवल भाई की बहन की रक्षा करने की प्रतिज्ञा तक सीमित करना भी उचित नहीं होगा। आज की बहन कमजोर नहीं, बल्कि परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण में बराबर की भागीदार है। इसलिए राखी का अर्थ संरक्षण के साथ-साथ सम्मान, समानता, सहयोग और विश्वास भी होना चाहिए।

भाई अपनी बहन की रक्षा करे, यह सुंदर भावना है; लेकिन उससे भी सुंदर यह होगा कि वह उसकी स्वतंत्रता, शिक्षा, निर्णय और सपनों का सम्मान करे। बहन भी भाई के सुख-दुख में उसी आत्मीयता से साथ खड़ी रहे। वास्तव में रक्षा का यह रिश्ता दोतरफा होना चाहिए।

एक धागा, अनेक संदेश

रक्षाबंधन का संदेश केवल भाई-बहन तक सीमित नहीं है। यह हमें समाज में विश्वास और सद्भाव की डोर मजबूत करने की प्रेरणा देता है। यदि हम अपने आसपास के लोगों के प्रति थोड़ी अधिक संवेदनशीलता रखें, जरूरतमंद का हाथ थामें, बुजुर्गों का सम्मान करें, बेटियों को समान अवसर दें और प्रकृति की रक्षा का संकल्प लें, तो रक्षाबंधन की भावना और व्यापक हो सकती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि राखी केवल कलाई पर न बँधे, बल्कि हमारे व्यवहार में भी दिखाई दे। किसी दुखी व्यक्ति के आँसू पोंछना, किसी अकेले बुजुर्ग से दो पल बात करना, किसी जरूरतमंद बच्चे की शिक्षा में सहयोग करना—ये भी रक्षा के ही रूप हैं।

राखी का धागा हमें जोड़ता रहे

रक्षाबंधन के दिन जब बहन भाई की कलाई पर राखी बाँधे तो उस क्षण केवल एक रस्म पूरी न हो, बल्कि दोनों के बीच वर्षों से चले आ रहे प्रेम को फिर से शब्द मिलें।

भाई यह संकल्प ले कि बहन के सम्मान और सपनों की राह में कभी दीवार नहीं बनेगा। बहन यह विश्वास दे कि जीवन की कठिन घड़ियों में वह भी भाई का संबल बनेगी। दोनों मिलकर यह तय करें कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी बदलें, उनके रिश्ते की मिठास कभी कम नहीं होगी।

आखिर राखी का धागा कितना ही कच्चा क्यों न हो, उसमें बँधा विश्वास बहुत मजबूत होता है। यही विश्वास परिवारों को जोड़ता है, पीढ़ियों को संस्कार देता है और समाज को संवेदनशील बनाता है।

रक्षाबंधन इसलिए केवल त्योहार नहीं, रिश्तों को फिर से जीने का अवसर है।

आइए, इस रक्षाबंधन हम केवल कलाई पर राखी न बाँधें, बल्कि अपने प्रिय रिश्तों को समय, सम्मान और संवेदना की राखी भी बाँधें। क्योंकि जीवन की सबसे बड़ी दौलत वही रिश्ते हैं, जो मुश्किल समय में बिना बुलाए हमारे साथ खड़े हो जाते हैं।

राखी का धागा कलाई पर रहे या न रहे,

बस दिलों में प्रेम और विश्वास की डोर कभी न टूटे।

स्व-घोषणा

सादर प्रकाशनार्थ प्रेषित यह आलेख 'रक्षाबंधन : कलाई पर बँधता धागा, दिलों में जुड़ता रिश्ता' पूर्णतः मौलिक, अप्रकाशित एवं अप्रसारित रचना है।

- सत्य भूषण शर्मा
बी-107, दिव्य ज्योति अपार्टमेंट, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर - 313001 (राजस्थान)
मो.: 9414934304